एकलव्य तथा द्रोण ऐतिहासिकता की धरोहर– द्रोण मंदिर

डॉ. रुचि रानी
असिस्टेंट प्रोफेसर
(चित्रकला विभाग)
श्री द्रोणाचार्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय
दनकौर (गौतम बुद्धनगर)

भारतीय कला संस्कृति हमारी बहुमूल्य धरोहर है। वह चाहे हमें किसी भी रूप में प्राप्त हुई हो उसका हमारे जीवन में विशेष महत्व है उसी में से एक है द्रोण नगरी। कौरव और पांडवों की शिक्षा नगरी रही दनकौर में गुरु द्रोणाचार्य का मंदिर आज भी विराजमान है। उसकी ऐतिहासिकता स्थापत्यकला, महत्ता, विशिष्टता ,गौरवमयी धरोहर का वर्णन इस शोध पत्र में करते हुए यह आशा करती हूं कि यह लेख विद्वत जनों को महाभारत काल के एकलव्य तथा द्रोणाचार्य जी के प्रति ध्यान आकर्षित करेगा।

सदियों से बसी द्रोण नगरी जिसे प्रारंभ में द्रोणकौर के नाम से जाना जाता था।लेकिन आज के बदलते परिवेश ने इस नगरी के नाम को भी परिवर्तित कर दिया है। आज इस नगरी को द्रोणकौर के अपभ्रंश नाम दनकौर से जाना जाता है। यह स्थान उत्तर प्रदेश के गौतम बुद्ध नगर जिले के कस्बा दनकौर में स्थित है

दनकौर का द्वापर युग से ही पुराणों तथा धार्मिक ग्रंथों में विशेष महत्व रहा है।यह क्षेत्र यमुना नदी के किनारे वाला सघन वन क्षेत्र रहा है।गुरु द्रोणाचार्य के नाम पर ही इस नगरी का नामकरण हुआ है। मान्यता है कि यह वह नगरी है जिसका संबंध द्वापर युग में जन्मे कौरव, पांडव एकलव्य व गुरु द्रोणाचार्य से है।प्राचीन इतिहास के अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि महाभारत महाकाव्य में कौरव ,पांडव ,एकलव्य व गुरु द्रोणाचार्य सभी चरित्रों का वर्णन है। प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर ज्ञात हुआ की इस द्रोण नगरी में एक प्राचीन द्रोण मंदिर है जो अपनी स्थापत्य कला का नमूना है। यह मंदिर शांति के आंचल में कितनी ही सरस भावनाओं को छुपाए अपने अस्तित्व में प्राचीन भारतीय इतिहास को उजागर कर एक संदेश दे रहा है जो व्याख्यान कर रहा है गुरु द्रोणाचार्य और एकलव्य की शिष्य परंपरा का।

यहां आज भी महाभारत काल का महत्वपूर्ण स्थल दनकौर में गुरु द्रोणाचार्य के मंदिर में गुरु द्रोणाचार्य की प्रतिमा स्थापित है। एकलव्य ने भी यहीं पर ही धनुर्विद्या सीखी थी। वही मंदिर परिसर में बने हुए तालाब का भी ऐतिहासिक महत्व है।

गुरू द्रोणाचार्य

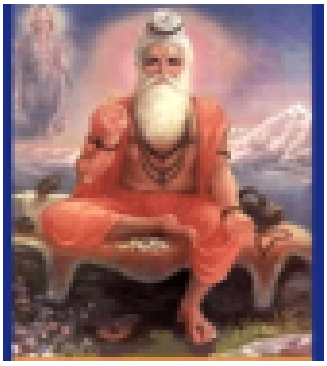

महाभारत में उल्लिखित लेखों के आधार पर गुरु द्रोणाचार्य महर्षि भारद्वाज के पुत्र थे। इनके पिता महान तपस्वी यशस्वी एवं वेदों के ज्ञाता थे।स्वयं गुरु द्रोण भी संसार के श्रेष्ठ धनुर्धर माने जाते थे।

"विश्रांतेअथ गुरौ तस्मिन पौत्रानादाय कौरवान्।
शिष्यत्वेन ददौ भीष्मो वसूनी विविधानि च" ।।२।। 2
"ग्रहं च सुपरिच्छन्नं धनधान्यसमाकुलम्।
भारद्वाजाय सुप्रितः प्रत्यपादयत प्रभुः" ।।३।। 3

भीष्म पितामह ने अपने कुरू वंशी पुत्रों को लेकर गुरु द्रोणाचार्य जी को शिक्षा रूप में समर्पित किया था साथ ही अत्यंत प्रसन्न होकर भारद्वाज नंदन द्रोण को नाना प्रकार के धन रत्न और सुंदर सामग्रियों से सुसज्जित तथा धन–धान्य से संपन्न भवन प्रदान किया।।२ –३।।

"स ताजिकिस्तान महेष्वासः प्रतिजग्राह कौरवान्।
पांडवान् धार्तराष्ट्रांश्व द्रोणों मुदितमानसः" ।।४।। 4

महाधनुर्धर आचार्य द्रोण ने प्रसन्न चित्त होकर उन धृतराष्ट्र पुत्रों तथा पांडवों को शिष्य रूप में ग्रहण किया।।4।।

"ततो निषादराजस्य हिरण्यधनुषःसुतः।
एकलव्यो महाराज द्रोणमभ्याजगाम ह" ।।5।।

तदनंतर निषादराज हिरण्यधनु का पुत्र एकलव्य द्रोण के पास आया ।

"न स तं प्रतिजग्राह नैषादिरिति चिंतन।
शिष्यम् धनुषि धर्मज्ञस्तेषामेवान्ववेक्षया" ।।३३।।6

परंतु उसे निषाद पुत्र समझकर धर्म के आचार्य ने धनुर्विद्या विषयक शिष्य नहीं बनाया ।

"स तु द्रोणस्य शिरसा पादौ ग्रहयं परंतपः।
अरण्यमनु संप्राप्य कृत्वा द्रोणं महीमयम्:" ।।३४।।7 "
"तस्मिन्नाचार्यवृत्तिं च परमामास्थितस्तदा।
ईष्वस्त्रे योगमातस्थे परम् नियममास्थितः" ।।३५।।8

एकलव्य ने द्रोणाचार्य के चरणों में मस्तक रखकर प्रणाम किया और वन में लौट कर उनकी मिट्टी की मूर्ति बनाई। उसी में आचार्य की परमोच्च भावना रखकर उसने धनुर्विद्या का अभ्यास प्रारंभ किया ।

दनकौर के द्रोण नगरी में बसा यह द्रोण मंदिर वही स्थान है जहां गुरु द्रोणाचार्य की मूर्ति बनाकर एकलव्य ने धनुर्विद्या का अभ्यास किया था और लगातार अभ्यास करने से वह धनुर्विद्या सीख भी गए थे ।

गुरू शिष्य परम्परा का संवर्धन –

एक दिन पांडव और कौरव राजकुमार गुरु द्रोण के साथ शिकार के लिए पहुंचे तभी राजकुमारों का कुत्ता एकलव्य के आश्रम में जा पहुंचा और भौंकने लगा। कुत्ते के भौंकने से एकलव्य को अभ्यास करने में परेशानी होने लगी अतः उन्होंने कुत्ते के मुंह को बाणों से बंद कर डाला। उन्होंने इतनी कुशलता से बाण चलाए कि कुत्ते को बाणों से तनिक भी कष्ट नहीं हुआ। सभी राजकुमार ने जब उस कुत्ते को देखा तो वह धनुर्विद्या का यह कौशल देखकर चकित रह गए और वह हाथ की पूर्ति तथा शब्द के अनुसार लक्ष्य भेदने की उत्तम शक्ति देखकर उस कुत्ते की और दृष्टि डालकर लज्जित हो गए और सब प्रकार से बाण चलाने वाले की प्रशंसा करने लगे । तभी राजकुमारों ने वनवासी वीर की वन भूमि में खोज करते हुए एकलव्य को निरंतर बाण चलाते हुए देखा उस समय उसका रूप बदला हुआ था। पांडव एकलव्य को पहचान ना सके तथा एकलव्य से पूछने लगे तुम कौन हो, किसके पुत्र हो। तब एकलव्य ने कहा आप लोग मुझे निषादराज हिरण्यधनु का पुत्र तथा द्रोणाचार्य का शिष्य जाने। मैंने धनुर्विघा में विशेष परिश्रम किया है। सभी राजकुमार उस निषाद राज का यथार्थ परिचय पाकर लौट आए और जो अद्भुत घटना घटी थी वह सब उन्होंने द्रोणाचार्य से कह सुनाई। लेकिन गुरु द्रोण अपने शिष्य अर्जुन को बहुत प्यार करते थे और उसे श्रेष्ठ धनुर्धर बनाना चाहते थे ।इसलिए गुरु द्रोणाचार्य एकलव्य से मिलने के लिए वन में गए।

"एकलव्यस्तु तम् दृष्टवा द्रोणमायन्तमन्तिकात् ।
अभीगम्योपसंगृहय जगाम शिरसा महीम" ।।५२।।9

जब एकलव्य ने आचार्य द्रोण को समीप आते देखा तो आगे बढ़कर उनकी अगवानी की और उनके दोनों चरण पकड़ कर पृथ्वी पर माथा टेक दिया।

"पुजयित्वा ततो द्रोणं विधिवत् स निषादजः।
निवेद्य शिष्यमात्मानम् तस्थौ प्राञ्जलिरग्रतः" ।। ५३।।10

फिर उस निषाद कुमार ने अपने को शिष्य के रूप से उनके चरणों में समर्पित करके गुरु द्रोण की विधि पूर्वक पूजा की और हाथ जोड़कर उसके सामने खड़ा हो गया।

"ततौ द्रोणोअब्रवीद् राजन्नेकलव्यमिदं वचः।
यदि शिष्योंअसी मे वीर वेतन दीयतां मम" ।।५४।।11
एकलव्यस्तु तन्मात्रा प्रीयमाणोअब्रवीदिदम् ।

तब द्रोणाचार्य ने एकलव्य से यह बात कही कि वीर यदि तुम मेरे शिष्य हो तो मुझे गुरु दक्षिणा दो यह सुनकर एकलव्य बहुत प्रसन्न हुआ और इस प्रकार बोला

"किं प्रयच्छामि भगवन्नाज्ञापयतु मां गुरुः ।
न हि किंचिददेयं में गुरुवे ब्रह्मावित्तम" ।।५५।।१२

भगवन मैं आपको क्या दूं ? स्वयं गुरुदेव ही मुझे इसके लिये आज्ञा दें ।मेरे पास ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो गुरु के लिए अदेय हो ।तब द्रोणाचार्य ने उससे कहा कि "तुम मुझे दाहिने हाथ का अंगूठा दे दो।"

एकलव्य से अंगूठा मांगने पर एकलव्य ने खुशी–खुशी अपना अंगूठा गुरु द्रोणाचार्य को दे दिया था। स्थानीय लोगों से बातचीत करने पर ज्ञात हुआ कि यह वही स्थान है ।जहां एकलव्य ने द्रोणाचार्य को अपना अंगूठा भेंट किया था ।वर्तमान समय का यह द्रोण मंदिर उसी द्रोण नगरी की याद दिलाता है।

मंदिर की स्थापत्य कला

वर्तमान प्राप्त मंदिर 19वीं शताब्दी का माना जाता है ।धीरे–धीरे यह विकास क्रम में आगे बढ़ने लगा आस्था और विश्वास के आधार पर भक्तजनों ने समय–समय पर अनेक कर गर्भ ग्रहों का निर्माण कराया ।

इस द्रोण नगरी में गुरु द्रोणाचार्य के मस्तक की एक मूर्ति प्राप्त हुई है।कहा जाता है कि यह वही मूर्ति है जिसे एकलव्य ने धनुर्विद्या का अभ्यास करते समय निर्मित किया था।इस मंदिर परिसर में अनेक गर्भ गृह बने हुए हैं।जिसमें सबसे प्राचीन गर्भ ग्रह गुरु द्रोणाचार्य बाबा का है।इसी गर्भ ग्रह में एकलव्य द्वारा बनाई गई गुरु द्रोण के मस्तक की मूर्ति है।जो आज भी मंदिर में पूरे वैभव के साथ विराजमान हैं।लेकिन अब यह मूर्ति जीर्ण शीर्ण अवस्था में है। फिर भी लोग इनकी पूजा करते हैं।धारणा यह है कि यहां पर जो कोई भी आता है उसकी मनोकामना पूर्ण हो जाती है।यहां रविवार का विशेष महत्व है इस दिन गुरु द्रोणाचार्य बाबा की विशेष पूजा की जाती है।लोग अपनी मनोकामना पूर्ण हो जाने पर श्रावण मास में रविवार के दिन ब्राह्मणों को भोजन कराते हैं।

मंदिर में की गई एकलव्य जैसी दूसरी मूर्ति स्थापित –
एकलव्य की बनी मूर्ति के जीर्ण शीर्ण अवस्था में होने के कारण कुछ दिन पूर्व इस मंदिर के अध्यक्ष महिपाल गर्ग ने दूसरी द्रोणाचार्य बाबा की मस्तक की मूर्ति को स्थापित करा दिया है।उनका कहना है की यह मूर्ति उन्होंने राजस्थान से बनवाई है।

द्रोणाचार्य मंदिर में बने अन्य गर्भ ग्रह–

प्राप्त शिलालेखों के आधार पर इस प्रतिमा को लाला किशन चंद वेरिया द्वारा स्थापित कराया गया है जिसमें गुरु द्रोणाचार्य की मूर्ति है।इस प्रतिमा को सन् 1980 ईस्वी में (संवत 2037) में स्थापित किया गया था।

तीसरा गर्भ ग्रह–
प्राप्त शिलालेखों के आधार पर इस प्रतिमा को स्वर्गीय पार्वती देवी धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री लाल की पुण्य स्मृति में उनके पुत्र अतुल कुमार द्वारा स्थापित कराया गया था जिसमें संतोषी मां की प्रतिमा स्थापित है।

चौथा गर्भ ग्रह–
प्राप्त शिलालेखों के अनुसार इस मंदिर का निर्माण स्वर्गीय श्री हरसहायमल जी के सुपुत्र विवेक कुमार गर्ग व प्रमिला रानी गर्ग पुत्र श्री विनोद कुमार गर्ग द्वारा 1982 ईस्वी में स्थापित कराया गया था इस गर्भ ग्रह में मां काली की प्रतिमा स्थापित है।

पाँचवा गर्भ ग्रह–
पांचवें गर्भ ग्रह मे देवी दुर्गा की प्रतिमा है।

छठा गर्भ ग्रह–
प्राप्त शिलालेखों के अनुसार इस प्रतिमा को स्वर्गीय बाबा पन्नालाल रहे स्वर्गीय बाबा सूखा मल की पुण्य स्मृति में उनके पुत्र बाबूलाल मुसद्दीलाल नारायणदास निर्मित कराया था जिस में शिव पार्वती की प्रतिमा विराजमान है ।

सांतवा गर्भ ग्रह–

प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर इस प्रतिमा का निर्माण स्वर्गीय श्री ओमप्रकाश गर्ग धर्मपत्नी स्वर्गीय श्रीमती विद्या देवी की पुण्य स्मृति में महिपाल गर्ग धर्मपत्नी स्नेह लता गर्ग ने निर्मित कराया था इस गर्भ ग्रह में गणेश जी की प्रतिमा स्थापित है।

आठवा गर्भ ग्रह–

प्राप्त शिलालेखों के आधार पर इस गर्भ ग्रह का निर्माण स्वर्गीय विरमा देवी धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री लक्ष्मण दास के पुत्र चौधरी भगवती प्रसाद ने कराया था । इस गर्भ ग्रह में राम परिवार विराजमान है ।

मंदिर परिसर में विराजमान शिव मंदिर–

इसी मंदिर परिसर में एक शिव मंदिर भी है। जिसमें शिवभगवान अपने पूरे परिवार के साथ विराजमान हैं।

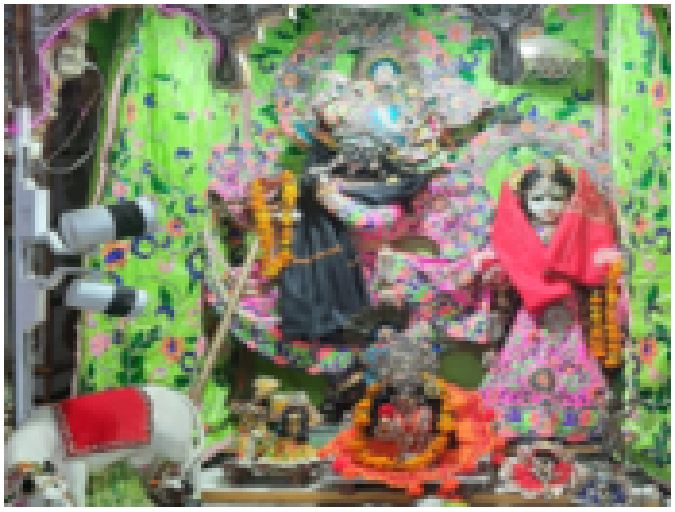

मंदिर परिसर में विराजमान शिव मंदिर–

इसी मंदिर परिसर में एक शिव मंदिर भी है। जिसमें शिवभगवान अपने पूरे परिवार के साथ विराजमान हैं।

राधा कृष्ण मंदिर –

मंदिर के इसी प्रांगण में एक राधा कृष्ण मंदिर भी है। स्थानीय लोगों का कहना है कि यह कृष्ण भगवान की मूर्ति उसी समय की है। जब वृंदावन में बांके बिहारी जी की मूर्ति की स्थापना हुई थी तभी दनकौर में भी इसी मंदिर में बांके बिहारी जी की मूर्ति की स्थापना की गई थी इसलिए यहां प्रत्येक वर्ष जन्माष्टमी के उत्सव पर एक दस दिवसीय मेले का आयोजन किया जाता है। जिसे लोग बड़ी धूमधाम से मनाते हैं राधा कृष्ण मंदिर में देवी के नौ रूपों ,गाय के साथ कृष्ण, गोवर्धन पर्वत उठाते हुए कृष्ण तथा अन्य देवताओं की प्रतिमाएं भी स्थापित की गई है।

प्रतिमाएं भी स्थापित की गई है।

मंदिर में उपलब्ध तालाब की ऐतिहासिकता

मंदिर के प्रांगण में एक तालाब भी है। जिसे प्राचीन धरोहर होने के कारण द्रोणाचार्य तालाब भी कहा जाता है। यह तालाब द्वापर युग में एकलव्य के समय से मौजूद है। स्थानीय लोगों से बात करने पर ज्ञात होता है कि यह तालाब श्रापित है कहां जाता है कि एक ऋषि इस तालाब में से अपने कमंडल में जल भर रहे थे तभी उनका कमंडल तालाब में डूब गया तब उन्होंने श्राप दिया था कि यह तालाब जल विहीन रहेगा अतः लोगों की धारणा है कि इस तालाब में कितना भी जल क्यों न भर दिया जाए मात्र 1 या 2 दिन में वह सब सूख जाता है। तालाब में पानी रुकता नहीं है लोगों का यह भी यह भी कहना है कि काफी समय पहले जब यमुना पर बांध नहीं था तब दनकौर में बाढ़ आ जाया करती थी लेकिन इसी तालाब के कारण बाढ़ का पानी सूख जाया करता था कहा जाता है कि ब्रिटिश शासकों ने इस तालाब का बखूबी परीक्षण कराया था बुलंदशहर के उस समय के जिले कलेक्टर ने इस तालाब को पानी के लिए खुदवाया था ।लेकिन वह भी अपनी कोशिश में नाकामयाब रहे और श्री द्रोणाचार्य के चमत्कार के आगे नतमस्तक हो गए।

इस तालाब को 1883 ईस्वी में कैप्टन साल्टपीटर नाम के एक अंग्रेज ने पक्का करवाया था। यहां प्रत्येक वर्ष जन्माष्टमी के अवसर पर होने वाले मेले के आयोजन में तालाब में एक विशाल दंगल का आयोजन किया जाता है । जो उत्तर प्रदेश का सर्वोच्च दंगल माना जाता है । 3 दिन तक चलने वाले इस दंगल में दिल्ली, हरियाणा, मध्यप्रदेश ,गुजरात और उत्तर प्रदेश अनेकों स्थान से आकर पहलवान भाग लेते हैं । तथा सदियों से चली आ रही परंपरा को आगे बढ़ाते हुए दर्शकों का मनोरंजन करते हैं । इसी तलाब के पास एक रंगमंच है जिसमें मेले के अवसर पर अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है । जिसमें विभिन्न प्रकार के नाटक, रागनी कवि सम्मेलन, वह रंगरंग कार्यक्रम आदि शामिल होते हैं इस रंगमंच की स्थापना 1923 ईस्वी में की गई थी। तथा 1964 के आसपास यहां पक्की स्टेज बनाई गई थी। लोगों से बात करने पर ज्ञात हुआ कि इस सांस्कृतिक कार्यक्रम की नींव पंडित मंगत राम जी के सानिध्य में रखी गई थी।

कलव्य पार्क–

आकर्षण के उद्देश्य से इस मंदिर परिसर में एकलव्य का एक सुंदर पार्क भी है। पार्क के बीच में एकलव्य की एक सुंदर प्रतिमा स्थापित की गई है।

भारतीय पुरातत्व विभाग ने दिया राष्ट्रीय धरोहर का दर्जा–

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने इस धरोहर को राष्ट्रीय महत्व का दर्जा अधिसूचित किया है। पुरातत्व विभाग ने 2013 ईस्वी में इस ऐतिहासिक मंदिर और पूरे परिसर की महत्ता को समझते हुए इस द्रोणाचार्य मंदिर को ऐतिहासिक धरोहर की इमारत घोषित कर दिया है। तथा राष्ट्रीय महत्व का दर्जा भी दिया है। इस संबंध में पुरातत्व विभाग ने साइन बोर्ड भी लगवा दिए हैं। केंद्रीय पर्यटन मंत्री डॉ महेश शर्मा ने इसे पर्यटन नगरी बनाने की घोषणा भी की है। जल्दी ही इस पूरे परिसर के जीर्णोद्धार की प्रक्रिया शुरू की जाएगी। इसे महाभारत सर्किट में भी शामिल करने की केंद्र और राज्य सरकार की योजना है।

सुझाव –

अब यह इलाका यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण का अधिसूचित क्षेत्र है यमुना एक्सप्रेसवे मंदिर से 400 मीटर की दूरी से होकर ही गुजरता है । ठीक सामने बुद्ध इंटरनेशनल सर्किट है। ऐतिहासिक महत्व को देखते हुए दनकौर विकास मंच ने दनकौर का नाम द्रोण नगर रखने की मांग भी की है। मेरा सुझाव है कि इस द्रोण नगरी को शीघ्र ही पर्यटन नगरी बनाया जाए ताकि सभी लोग इसकी महत्ता को समझ सके।

संदर्भ ग्रंथ –

1 – महाभारत –संभव पर्व (एकत्रिंशदधिकशततमोअध्यायः) प्रष्ठ– 397
2 – महाभारत –संभव पर्व (एकत्रिंशदधिकशततमोअध्यायः) प्रष्ठ– 397
3 – महाभारत –संभव पर्व (एकत्रिंशदधिकशततमोअध्यायः) प्रष्ठ– 397
4 – महाभारत –संभव पर्व (एकत्रिंशदधिकशततमोअध्यायः)